



शिव = गारमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई-पत्रिका
अंक -4 : माह-अप्रैल 2023



आशीर्वाद :

प.पू. परमहंस स्वामी सुगधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा
प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट



लंबे समय के बाद सद्गुरु आदेश से साप्ताहिकी यात्रा पर निकलना हुआ है। अब तो 1 माह से अधिक का समय बीत चुका है।

कई शहरों और केंद्रों पर साधकों से मिलना हुआ। हर साधक से मिलकर बहुत आनंद मिला। साधकों की आत्मीयता और प्रेम देखकर मैं बहुत अभिभूत हूं। वो खुशी से चमकती आंखें, आंसुओं से छलकती आंखें, मेरे स्वास्थ्य की चिंता से भरी आंखें और लंबे समय के बाद मिलने पर प्यार भरी शिकायत करती आंखें। हर जगह सुनने को मिला कि गुरुदेव आपके आने पर हमें कितनी खुशी हुई यह हम बयां नहीं कर सकते। आप साधकों ने तो अपनी खुशी बोलकर व्यक्त कर दी पर आप सभी साधकों से मिलकर मुझे जो खुशी हुई वह कैसे बताऊं? मुझे तो बोलना भी नहीं आता। शब्द बाहर आने से पहले ही कंठ भर आता है। इतना प्यारा और सुंदर परिवार किसे मिलता है? इस बात को सोच सोच कर मैं अपने गुरुदेव को कोटि कोटि धन्यवाद देती हूं।

अब तो सत्संग का क्रम भी लगभग मध्य रात्रि से आरंभ होता है। लगभग भोर तक चलता है। पर फिर भी

साधक शिकायत नहीं करते। वही उत्साह, जोश। किसी की आंख में ना तो थकान है और ना ही नींद की कोई झलक। कोई उठने को तैयार नहीं और दो-तीन घंटे का विश्राम लेकर सभी वापस जप, गुरु गीता और सेवा के लिए तत्पर हो जाते हैं। परमानंद ही परमानंद।

ऐसे में मुझे थकान होती भी है तो महसूस नहीं होती। चौबीसों घंटे नाम जप, साधकों से भरा आश्रम, दिनभर व्यस्त अन्नपूर्णा, खुशी से अनुभव बांटते साधकगण, सेवा में दौड़ते युवा साधक, सत्संग व भजन की मस्ती, और क्या चाहिए?

यह तो पहला चरण है। अभी तो अन्य शहरों और वृंदावन आश्रम की यात्रा शेष है। वहां सभी साधक इंतजार कर रहे हैं और यथाशक्ति तैयारियों में जुटे हुए हैं।

एक बात जरूर कहना चाहूंगी। जहां भी साप्ताहिकी सत्संग का आयोजन हो रहा है वहां महीनों से तैयारियां चल रही हैं। तन, मन, धन से साधक अपना योगदान कर रहे हैं। मैं चाहती हूं कि इस कार्य के लिए हर साधक को स्वयं आगे आना चाहिए। सभी ने दीक्षा ली है, सभी को दर्शन करने और मुझसे मिलने की इच्छा है। जब मैं पहुंच



आऊंगी उसके बाद तो सभी को आना ही है और आएंगे ही पर मेरी इच्छा है की सभी तैयारी के लिए भी पहले से आएँ। सद्गुरु सभी के हैं, साप्ताहिकी सभी की है तो जिम्मेदारी भी सभी की है। सेवा का आनंद और फल अद्भुत है। ऐसे साधकों की तरफ सद्गुरु का ध्यान अपने आप जाता है और वे आशीर्वाद के पात्र बनते हैं।

आपकी अपनी बा



सहज अभिव्यक्ति



सद्गुरु शरणागति किसी भी साधक के लिए परम सौभाग्य का अवसर होता है। ऐसा लगता है कि किनारा आ गया है। साधक शरणागति पाकर निश्चिंत हो जाता है। पर हमारी परंपरा में यह किनारा पहला किनारा है यानी शुरुआत है। शुरुआती किनारे पर बैठना है तो ठीक है किंतु दूसरे किनारे तक जाने की मानसिकता है तो फिर हमें सुगंध पथ के यात्री की पात्रता रखनी होगी।

सद्गुरु शरणागति तो सबको मिल सकती है क्योंकि सद्गुरु वात्सल्य मूर्ति होते हैं। किसी का भी कष्ट उनसे देखा नहीं जाता। करुणा सद्गुरु का सहज स्वभाव होता है। इसलिए जो भी शरण की याचना करे उसे उनकी शरण उपलब्ध होती ही है। शरणागति का अर्थ केवल रक्षा नहीं है बल्कि अब आगे मेरी बुद्धि से कुछ नहीं होकर सद्गुरु मंशा से ही सब होगा यह भाव है। शरण में आने के बाद साधक की सोच, निजता, वृत्ति आदि गिर जाते हैं। इस घटना से साधक भी सद्गुरु चरणों में गिर जाता है।

यही वह स्थिति है जहां से सद्गुरु का संसार प्रारंभ होता है। वह ध्यान की नाव पर बिठाकर जप की पतवार से हमें उस पार जाने का मार्गदर्शन करता है। समय-समय पर वह यह भी जांचता है कि पतवार सही ढंग से चल रही है, नाव निरापद है तथा ठीक दिशा में बढ़ रही है या नहीं? किसी साधक के पार पहुंचने पर सद्गुरु को कितना संतोष होता होगा यह तो वह जाने

किंतु साधक का तो जीवन ही धन्य हो जाता है। शरणागति से चलकर शीर्ष तक जाने में साधक को जो आनंद मिलता है वही तो सच्चिदानंद रूप है। उस आनंद को ही युगों युगों से अनुभव किया गया है। उसी आनंद की प्राप्ति के लिए सद्गुरु की शरणागति है। शुरू करना हमारे हाथ में है और सच्ची शरणागति हो तो लक्ष्य तक ले जाना सद्गुरु का प्रिय कार्य है। हम हमारा काम ठीक से कर लें तो आगे सब कुछ ठीक होना ही है।

आपका ही
स्वामी गुरुराजेश्वरानंद
शिवपुरी आश्रम





धर्म जगत में तीर्थों में जाकर स्नान करने का बड़ा महत्व है। प्राचीन ऋषियों, संतों व धर्म प्रचारकों ने इस परंपरा को यह सोचकर ही प्रारंभ की होगी कि व्यक्ति बाह्य रूप से शुद्ध होगा तो फिर आंतरिक शुद्धता की और भी ध्यान जाएगा। तीर्थों का पावन जल तन के साथ-साथ मन को भी पवित्र करता है। परंतु वर्तमान में तीर्थों के स्नान की वृत्ति तो बढ़ती गई पर शुचिता की वृत्ति उस अनुपात में नहीं दिखाई देती है। ग्रंथों का वाचन, प्रवचन का श्रवण, तप, व्रत व अनुष्ठान आदि अनेक ऐसे सद्कार्य हैं जो सभी प्रकार की शुद्धि करते हैं। ध्यानमार्गियों के लिए अंतर्स्नान का एक अनुभूत स्रोत है ध्यान। जैसे बाहरी स्नान से शरीर का मैल, आलस्य एवं गरमी आदि से निजात मिलती है ठीक वैसे ही अंतर्स्नान से मन के विकार, अनास्था व दुर्बलता से मुक्ति मिलती है।

अंतस्नान का संबंध सांस से, नाड़ियों से, चक्रों से तथा चैतन्यता से है। सांस को लंबा लेना व अधिकतम प्राणवायु को भीतर पहुंचाना रक्त के संचरण व शुद्धि में सहायक है। जप के द्वारा ध्वनि कंपन व भावों का प्रवाह नाड़ियों को निर्मल करता है। हमारे शरीर में जो चक्र हैं उनमें शक्ति मूलाधार से सहस्रार तक की यात्रा करने लगे तो शिव से शक्ति के मिलन की संभावना जगती है। यह मिलन आनंद का स्रोत बनकर जीवन में सरसता उतार देता है। यही सरसता व आनंद साधक को चैतन्य बना देते हैं।

जैसे बाहरी स्नान के लिए जल आवश्यक है वैसे ही अंतस्नान के लिए जप आवश्यक है। बाहरी स्नान में हम डूबकी लगाकर जल में पूरे समा जाते हैं वैसे ही ध्यान में डूब कर हम स्वयं की शक्ति को जागृत कर पाते हैं। बाहरी स्नान और अंतस्नान का परस्पर गहरा संबंध है। यदि बाहरी शुचिता हो गई तो भीतरी शुचिता में भी अनुकूलता होगी। इसलिए बाहरी स्नान के उपाय करने में कोई मनाही नहीं है किंतु लक्ष्य भीतरी स्नान है।

लगातार अंतस्नान होता रहे तो निर्मलता, निर्विचारता व निर्विकल्पता सधने लगती है। गुरुदेव का कहना है कि जिसने भी निरंतर 100 घंटे अंतस्नान का कर्म कर लिया उसकी क्रियाएं छूटकर उपलब्धियां हासिल होने लगती है।





जब मैं गिरगांव में रहती थी तब एक साधिका शांता गोरे ताई रोज आया करती थी। वह मुझे रुद्रम सुनाती थी। रुद्रम में जो संयुक्त अक्षर आते हैं वे मुझे बोलना नहीं आते थे इसलिए मैं मौन होकर उन्हें सुनती थी। एक गुरुवार की बात है जब गोरे ताई आई तब घर की सफाई करके पुष्पा काकी पोछा लगा रही थी। पोछे के कारण फर्श गीला था तो ताई को कुछ देर इंतजार करना पड़ा। तब मैं अपने आसन पर बैठकर कुछ पढ़ रही थी। ताई आसन पर बैठी और रुद्रम प्रारंभ किया। रुद्रम सुनते सुनते ही मुझे ध्यान लग गया। ध्यान में मुझे संकेत और आदेश हुआ कि घर में पूरनपोली आई है संभाल लेना। हालांकि यह नहीं पता था कि वह कहां रखी है?

थोड़ी देर बाद ताई ने रुद्रम पूरा किया और आसन से उठ कर बोली कि मैं अब जाती हूं। गोरे ताई आती तो नियमित थी किंतु उनकी श्रद्धा पूर्ण रूप से नहीं हुई थी। जैसे ही वह उठी तो आसन के नीचे एक फोटो उन्हें दिखा। उठाकर देखा तो वह गजानन महाराज का फोटो था। ताई बड़ी विस्मित थी कि यह फोटो कहां से आ गया? उनके बैग में फोटो था नहीं और फर्श की भी पूरी सफाई उनके सामने ही हुई थी। गजानन महाराज उनके इष्ट थे इसलिए उन्हें

यह ग्लानि भी हो रही थी की महाराज के फोटो पर मैं बैठी थी। वे बार-बार उस फोटो को नमन करती जा रही थी और आश्चर्य भी व्यक्त कर रही थी। वे इस घटना से रोमांचित हो कर वापस आसन पर बैठ गईं।

इधर मेरे कहने पर घर में पूरनपोली कहाँ रखी है इसकी खोज में गीता काकी एवं कांता काकी लगी हुई थी। गोरे ताई के पास सूखे कपड़ों का ढेर था जिन्हें समेटने के लिए रखा था। जब उसे ढेर को उठाया गया तो उसके नीचे कुल १८ पूरनपोली रखी हुई थी। वे पूरनपोली पीलापन लिए हुए एवं बहुत नरम थीं। सामान्यतः जो तुलजापुर वाली पूरनपोली होती है वह गुड़ की बनती है इसलिए कुछ गहरा रंग होता है और जो कोल्हापुर वाली पूरनपोली होती है वह शक्कर और गुड़ से बनती है तथा पीली और नरम रहती है। ये पूरनपोली कोल्हापुर वाली थी। फिर ताई सहित घर के सभी सदस्यों को पूरनपोली का प्रसाद दिया गया। ताई के लिए यह दूसरी चमत्कारी घटना थी। इन दोनों घटनाओं से प्रभावित होकर वह तो नाचने लग गईं। कहने लगी यहाँ कोई न कोई शक्ति है जिसका परिचय मुझे मिल गया है। उसके बाद उनकी निष्ठा अत्यंत गहरी हो गई।



वानप्रस्थ यतिविधधर्म, परमहंस्यं भिक्षुक चरितं ।
साधोः सेवां बहुसुखभुक्तिं, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं ॥

चार आश्रम व्यवस्थाओं में श्रेष्ठ वानप्रस्थ धर्म जोकि निवृत्ति मार्ग का शुभारंभ है यह अनुकरणीय है । यति, मुनि, संन्यासी आदि होकर आराधन करना, अपने मार्ग पर प्रगति करना, ईश्वर प्राप्ति की ओर यात्रा करना श्रेष्ठ है । साधन करते-करते अध्यात्म जगत के शिरोमणि रूप में परमहंस अवस्था को पा जाना अत्यंत पावन स्थिति है । संत सेवा, भिक्षुक वृत्ति तथा याचक बनकर स्वयं के अभिमान को जीत लेना ये सब अच्छी उपलब्धियां हैं । किंतु इन सब की तुलना में सद्गुरु की प्राप्ति होना सबसे बढ़कर है । गुरु से बढ़कर किसी मानव के जीवन में और कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है ।



यूं तो साधक में साधकपन होता ही है इसीलिए वह साधक कहलाता है। फिर भी कुछ प्रारंभिक बातें हैं जिन्हें जानना व अपनाना हर एक साधक के लिए आवश्यक है। साधकपन को मोटे रूप में दो प्रकार से देखा जा सकता है। एक तो साधक का शिष्टाचार जो बाहरी है तथा दूसरा साधक का आचरण जो भीतरी है। शिष्टाचार को साधक का शृंगार भी कहा जा सकता है। साधकपन के कुछ शिष्टाचारों के प्रति यहां संकेत किया जा रहा है।

1. आश्रम, सद्गुरु सान्निध्य, केंद्र या अन्य स्थान पर अपनी परंपरा के साधन हेतु जाते समय साधक के पास अपना आसन, नित्य आराधना एवं परिचय पत्र होना चाहिए।

2. साधन के लिए व्यवस्थित बैठें ताकि दूसरों और स्वयं को भी व्यवधान न हो।

3. ध्यान के समय अपने कारण दूसरों को कोई बाधा न पड़े।

4. यदि सामूहिक ध्यान में बैठे हैं और अपना ध्यान समय से पूर्व टूट गया है या पूरा हो गया है तो भी पूरे समय शांत भाव से आसन पर बैठे रहें।

5. ध्यान छूटते ही तुरंत आसन न छोड़ें तथा न ही बातचीत करें।

6. यदि ध्यान शुरू होने के बाद कोई साधक आए तो वह जहां पर स्थान खाली हो वहीं बैठ जाए।

7. ध्यान के समय खांसी, छींक आदि का क्रम बंद न हो रहा हो तो उठकर ध्यान स्थल से बाहर आ जाएं।



8. ध्यान के समय किसी दूसरे साधक से स्पर्श न हो इस प्रकार बैठें ।

9. ध्यान से उठने के बाद आसपास के साधकों से जय श्री कृष्ण का अभिवादन करना चाहिए ।

10. यदि जमीन पर बैठकर ध्यान नहीं कर पाते हैं तो कुर्सी पर बैठकर पैरों के नीचे कंबल या कोई ऊनी कपड़ा अवश्य रखें ।

11. ध्यान के समय या ध्यान टूटने पर वापस ध्यान प्रारंभ करें तो अपने ध्यान मंत्र को मन ही मन उच्चरित करें ।

12. ध्यान की अवधि सामान्यतः एक घंटा होती है अतः बीच-बीच में समय देखना या अन्य साधकों को निहारना उचित नहीं है ।

13. ध्यान के प्रारंभ में ही इस प्रकार की मुद्रा में बैठें कि बार-बार बदलाव न करना पड़े ।

14. ध्यान के समय आंखें बंद, जीभ तालु से स्पर्श करती हुई हो तथा सांस गहरी चले । प्रारंभ में सांस के साथ ध्यान मंत्र भी चले ।

15. यदि सामूहिक जप में बैठे हैं तो अगुआ साधक जिस लय से जप कर रहा है उसका ही अनुसरण करें ।

16. जप में आंखें खुली हों तथा करताल एवं अन्य वाद्य यंत्र का उपयोग करें ।

17. यदि किसी साधक को लय-ताल में बजाना न आता हो तो ना बजाएं ।

18. जप में बैठने से पूर्व भस्म खाने व बुक्के को लगाने का कार्य कर लें ।

19. जब जपकर्ता की पारी बदलती है तो नवीन जपकर्ता पूर्व वाले को प्रणाम करके ही बैठें ।



20. नए जप वाले आते ही पूर्व के साधक उठकर चल न दें। कम से कम 5 मिनट उनके साथ जप करें।

21. अपने निर्धारित जप के समय से 5 मिनट पूर्व पहुंचें।

22. जप की सामान्य धुनों का ही प्रयोग करें ताकि सभी आसानी से उसे दोहरा सकें।

23. जप में जहां जगह मिले वहीं बैठे न कि अपने मित्र या परिजन के पास जाने के लिए सबको बाधा पहुंचाएं।

24. जब भी सामूहिक जप में जाएं तब या सप्ताहिकी आदि में अपने लिए जप के समय का निर्धारण करा लें।

25. यदि बाद की पारी में आने वाले साधकों को किसी कारण से विलंब हो तो उनके आने तक अपना जप तन्मयता से जारी रखें।

26. ध्यान व जप के समय अपना मोबाइल न ले जाएं तो सबसे अच्छा है। यदि वह साथ में है तो उसे शांत रखें तथा बीच-बीच में मैसेज आदि न देखें।

27. जप व ध्यान स्थल पर आते जाते समय दरवाजा आदि बजाकर व्यवधान न डालें।

28. इस समय किसी से कोई बात करनी अति आवश्यक हो तो संकेत से या अत्यंत धीमे स्वर में ही कुछ कहें।

29. जप में त्वरा व सक्रियता लाने हेतु जप करते हुए गरबा नृत्य किया जा सकता है।

उक्त सभी साधक के सामान्य शिष्टाचार हैं जिनका पालन करने से हम खुद तथा अन्य भी अच्छा अनुभव करेंगे।



श्रीमती नीलम त्रिवेदी, उदयपुर



प्रश्न : गुरुदेव से दीक्षा के पहले मैं अन्य पूजा पाठ करती रही हूँ। अब ध्यान व जप में इतना समय लगता है कि मैं पूर्व के कार्य और नई साधना दोनों ठीक से नहीं कर पाती। कृपया बताएं कि मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : हरेक व्यक्ति का मूल स्वभाव अध्यात्म के प्रति आकर्षण का होता ही है। वहां परमात्म शक्ति को पाने अथवा संस्कारवश एक उम्र के बाद किसी न किसी पद्धति से जुड़ता ही है। प्रणाली चाहे पूजा-पाठ की हो, चाहे दर्शन भ्रमण की हो, चाहे पठन श्रवण की हो या ध्यान की।

अपनी शक्तिपात परंपरा में ध्यान की महत्ता है। ध्यान के द्वारा ही हम अपने भीतर स्थित ईश्वरीय शक्तियों का जागरण कर सकते हैं। मूलाधार में स्थित सुसुप्त शक्ति को ध्यान द्वारा जगा कर सहस्रार में स्थित शिव से मिलाने का महत्वपूर्ण कार्य ध्यान द्वारा संभव है।



पूजा-पाठ का भी अपना महत्व है किंतु उनका भी मूल उद्देश्य तो शक्ति की चैतन्यता ही है। यदि किसी अनुगृहीत साधक को पूजा पाठ का पर्याप्त समय मिले तो उसे अवश्य जारी रखना चाहिए। जब शक्तिपात दीक्षा होती है तब सद्गुरु हमसे यही संकल्प कराते हैं कि नियमित ध्यान करेंगे। पूजा पाठ स्वभाववश या संस्कारवश प्रारंभ होते हैं जबकि ध्यान तो भीतरी प्यास एवं संकल्प से प्रारंभ हुआ है। यहां यह स्पष्ट है कि ध्यान अपने आप में एक पूर्ण अनुष्ठान है। यदि हम सद्गुरु चरणों में नत होते हैं तो समस्त तीर्थों का फल एवं सद्गुरु द्वारा प्रदान किए गए आसन पर बैठकर किया गया ध्यान सभी पूजाओं, सभी यज्ञों, सभी अनुष्ठानों का फल देता है। यह हमारी परंपरा की अनुभूत मान्यता है। ध्यान, पूजा पाठ व कर्मकांड में किसी भी प्रकार का विरोधाभास नहीं है। किंतु हमने सद्गुरु से अनुग्रह लिया है तो प्रतिदिन सुबह शाम एक एक घंटा ध्यान करना हमारा संकल्प है। ध्यान से जो फल प्राप्त होगा वह हमारे ही कल्याण के लिए है। यदि ध्यान के बाद भी पूजा आदि का समय मिलता है तो अवश्य करें और यदि समय नहीं मिले तो उसके प्रति आशंकित न हों। जैसे गुरु की पूजा करने से वह समस्त देवों के पास पहुंचती है वैसे ही ध्यान करने से समग्र पूजा अनुष्ठानों की परिपूर्णता हो जाती है।



श्रीमती विद्या राय, कैलिफोर्निया

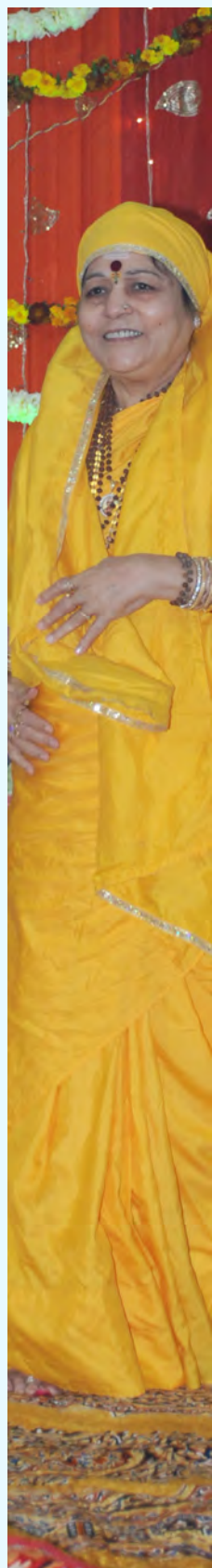
मैं जब भी गुरुदेव के दर्शन करती तो उन्हें कैलिफोर्निया आने का निमंत्रण औपचारिक और अनौपचारिक रूप से देती रहती हूँ। अपने परिवार की ओर से साप्ताहिकी का भी आग्रह करती रहती हूँ। 2023 के चैतन्य दिवस के आनंद के साथ हम कैलिफोर्निया लौट गए थे। फरवरी के पहले सप्ताह में आश्रम से संदेश मिला कि महाशिवरात्रि वाली साप्ताहिकी का हमारा अनुरोध गुरुदेव ने स्वीकार कर लिया है। अत्यंत हर्ष हुआ और यात्रा की योजना तुरंत बना ली। मेरे पति श्री शशिकांत जी राय को तत्काल अवकाश नहीं मिल पा रहा था तो यह तय हुआ कि मैं साप्ताहिकी के प्रारंभ पर पहुंच जाऊं और वे दो-तीन दिन बाद शरीफ हो जाएंगे। मैं अकेली ही शिवपुरी के लिए निकल गई।

सामान्यतः हर बार कैलिफोर्निया से टर्किश एयरलाइंस से इस्तांबुल तथा आगे उनकी ही कनेक्टिंग फ्लाइट से दिल्ली आ जाते हैं। आगे के लिए घरेलू उड़ानें उपलब्ध रहती हैं जिससे उदयपुर होकर शिवपुरी पहुंचते रहे हैं।

इस बार भी ऐसा ही है यह सोच कर मैं गुरुदेव को स्मरण करते हुए रवाना हो गई। जब मेरा हवाई जहाज इस्तांबुल पहुंचा तो उसमें दिल्ली जाने वाले कई सहयात्री भी थे। सभी बातचीत कर रहे थे कि अभी दिल्ली की फ्लाइट 2 घंटे बाद है। मैं भी निश्चिंत होकर प्रतीक्षालय में बैठी रही। कुछ समय ही निकला होगा कि एक एयरपोर्टकर्मी सीधा मेरे पास आया और अपना टिकट दिखाने को कहा। मैं आश्वस्त थी तथा स्वयं को निर्धारित स्थान और समय पर पा रही थी इसलिए ज्यादा ध्यान नहीं

दिया। मैं बोली मुझे दिल्ली जाना है और मैं फ्लाइट की इंतजार कर रही हूँ। फिर भी उसने मेरा बोर्डिंग पास दिखाने को कहा। मैंने अनमने भाव से उसे दिखाया तो वह बोला-अरे, आपकी तो यहां से फ्लाइट नहीं होकर इंडिगो की फ्लाइट है और वह इस गेट से नहीं करीब 2 मील दूर दूसरा गेट है वहां से जाएगी। वह फ्लाइट चलने ही वाली है। यह सुनकर मैं अत्यंत घबरा गई। आदत है कि ऐसी कोई समस्या आती है तो मैं मन ही मन गुरुदेव से पूछती रहती हूँ। सहसा मेरे मुंह से निकला कि गुरुदेव अब क्या होगा? परेशानी व हानि दोनों सामने खड़ी थीं। तभी वह व्यक्ति बोला अब आप वहां तक नहीं पहुंच सकोगे। मैं चेयर कार्ट से आपको वहां पहुंचा दूंगा। गुरुदेव से मैंने कहा कि आप जानो और उस व्यक्ति के साथ हो गई। जो मुझे किसी अनजान मार्ग से ले चला। मैं झिझकी तो वह बोला आप निश्चिंत रहें यह कम दूरी वाला रास्ता है इसी से हम पहुंच सकेंगे। मैं निरंतर गुरुदेव का नाम लिए जा रही थी। इसी बीच उसने संबंधित फ्लाइट के अधिकारियों को फोन करके सूचित कर दिया कि एक यात्री को लेकर आ रहा हूँ कृपया द्वार बंद न करें। मुझे ठीक समय पर वह ले गया। मैंने उसकी इस सेवा पर कुछ उपहार देना चाहा किंतु उसने मना कर दिया।

तब मुझे अनुभव हुआ की गुरुदेव ने ही उसे मेरी सहायता के लिए भेजा था। मुझे तो मालूम ही नहीं पड़ता और मैं नहीं पहुंच पाती। उस व्यक्ति ने एक साधक की तरह ही मेरा सहयोग किया और मैं सही समय पर शिवपुरी पहुंच गई। धन्य हैं मेरे गुरुदेव जो प्रत्यक्ष दर्शन करने पर तो योग क्षेम वहन करते ही हैं पर अप्रत्यक्ष भी हर समस्या के समय खड़े होकर कुछ न कुछ व्यवस्था जमा ही देते हैं।



1. श्री अविनाश गद्रे, कैलिफोर्निया

शिव गरिमा ई पत्रिका का अंक पूरा पढ़ने में ज्यादा समय नहीं लगता है इसलिए हर एक साधक सुविधानुसार पढ़ सकता है, यह अच्छा है। गुरुदेव के अनुभव एवं साधन संबंधी मार्गदर्शन अमूल्य हैं। संपादकीय, कार्यक्रमों का विवरण व सूचनाएं उचित स्थान पर दी जा रही है। हमें पाठकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हमारे यहां नई पीढ़ी को हिंदी पढ़ने में दिक्कत होती है वे सुनकर समझ लेते हैं। यदि संभव हो तो इस पत्रिका का ऑडियो संस्करण भी प्रसारित करना चाहिए।



2. डॉ मधु जी उपाध्याय, शिवपुरी

शिव गरिमा बहुत सुंदर पत्रिका है। गुरुदेव के सान्निध्य में सत्संग का महत्व तथा गुरु दर्शन की जो महिमा बताई है वह अनुकरणीय है। मुझे पत्रिका के लेख ऐसे लगे जैसे मेरे मन की बात ही समाविष्ट कर ली गई हो।



3. श्री ललित दादा, रायपुर

बहुत ही सुंदर लेखनी द्वारा सामान्य शब्दों में साधन, साधक एवं साधन पथ की विशेषताओं का साफ, सुंदर व सटीक शब्दों में चित्रण किया जाना अद्भुत है।



एक मार्च को बांसवाड़ा के त्रिपुर आश्रम में सत्संग



4 मार्च को श्री चंद्रकांत जी व श्रीमती अमिता जी नेके द्वारा संचालित 'शिव माणिक' केन्द्र, इंदौर में अखंड नाम संकीर्तन व सत्संग



5 मार्च इंदौर में मध्यप्रदेश के सभी केन्द्रों के साधकों द्वारा अखंड नाम संकीर्तन व सत्संग



6 मार्च डाक्टर श्री सुहास जी व डाक्टर श्रीमती सुनयना जी बांडे के निवास पर अखंड नाम संकीर्तन व सत्संग



7 मार्च डाक्टर श्री सुहास जी बांडे के निवास पर परमपूज्य बाबा महाराज का पदार्पण व सत्संग



8 मार्च को भोपाल के बर्फानी बाबा आश्रम में सत्संग



बदलापुर के साधकों द्वारा गुरुपुत्र श्री दत्त प्रसाद जी के नेतृत्व में होली पर आदिवासी क्षेत्र में भोजन सेवा



शुक्रवार दिनांक 10 मार्च को नागपूर (महाराष्ट्र) मे
आदरणीय गुरुपुत्री पूनम ताई के निवास स्थान
शिव दत्त केंद्र पर गुरुदेव का आगमन



शनिवार दिनांक 11 मार्च को विदर्भ क्षेत्र के सभी साधक गण गुरुदेव के दर्शन प्राप्त करने पधारते



14 मार्च को नागपुर के शिव-प्रसन्न केन्द्र (श्रीमती अनुराधा जी व श्री अनिल जी कोहाड़े के निवास) पर अखंड नाम संकीर्तन गुरुदेव के सान्निध्य में



छत्तीसगढ़ प्रवास

17 मार्च को गुरुदेव के सान्निध्य में अखंड नाम जप का आयोजन
रायपुर के साधक श्री विनीत जी गुप्ता के आवास पर संपन्न



बिलासपुर में साधक यदुनाथ इटसेना के निवास पर गुरुदेव का आगमन



19 मार्च को बिलासपुर में साधिका श्रीमती अपर्णा सिंह जी के नवीन आवास पर सत्संग



कैलिफोर्निया में श्रीमती श्वेता जी एवं श्री कृष्ण प्रकाश जी के निवास पर अखंड नाम संकीर्तन



शिव त्रिलोचन आश्रम चपोरा में गुड़ीपाड़ा से रामनवमी तक नवाह्न अखंड नाम जप संपन्न







त्रैलोक्य आश्रम बदलापुर में रामनवमी पर्व



ध्यातव्य : 'शिव—गरिमा' पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की अवधारणा के अधीन हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही उपयोग हेतु हैं ।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित काशी शिवपुरी आश्रम, ईटालीखेड़ा, तहसील—सलुम्बर, जिला—उदयपुर (राज.)

से प्रकाशित 'शिव—गरिमा' ई—मासिकी, नि: शुल्क ।

संपादक : स्वामी गुरुराजेश्वरानंद, मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा), ग्राफिक्स: प्रमोद सोनी,

स्वर: संजय शुक्ला

संपर्क सूत्र : आश्रम : 9929681423,

www.prabhubaa.com

Prabhu Baa App

